**The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences**
**(IJARMS)**
Volume 1 Issue 2, 2018

# स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी कहानी का विकास :

**डॉ0 कौशलेन्द्र सिंह**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
पटेल श्री टीकाराम पी0जी0 कॉलेज,
साईं बगदाद मल्लवॉ, हरदोई (उ0प्र0)

प्रेमचन्द के आगमन से हिन्दी कहानी की दशा–दिशा बदलना शुरू हुई। वे पहले ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने कथा–साहित्य की अवधारणा ही बदल दी। कहानियों को मानवीय–मूल्यों और जीवन–संघर्ष से जोड़कर, इस विधा को समाजोन्मुख बनाया। कहानी की परंपरा में वे ऐसे प्रस्थान बिन्दु हैं, जिनका ओज आज तक बना हुआ है। प्रेमचन्द से पहले और समानांतर लिखने वालों से दूसरे प्रस्थान बिन्दु जयशंकर प्रसाद हैं। उसके बाद कहानी ने जो सर्वनात्मकता अर्जित की उसमें प्रेमचन्द और प्रसाद की दो भिन्न भाव, चिंतन और कथा–दृष्टियाँ शामिल हैं। उनके बाद जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द जोशी, यशपाल, उग्र, भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि ने कहानी को नयी मंजिल तक पहुँचाया।

पाँचवें दशक के अंत से आठवें दशक की समाप्ति तक हिन्दी कहानी के क्षितिज पर अनेक कहानी आंदोलनों का उदय और अवसान हुआ। इस दौरान हिन्दी कहानी विभिन्न आंदोलनों और उनके प्रवक्ताओं द्वारा खीचे गए आवृत्तों के भीतर फैली और निर्देशित मार्ग का अनुसरण कर आगे बढ़ती रही। नयी कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, सहज कहानी, समानांतर कहानी, जनवादी कहानी और सक्रिय कहानी के नारे चल पड़े। इन्हीं विविध आन्दोलनों के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कहानी ने वैविध्य और विकास के अनेक आयामों को स्पर्श किया और प्रत्येक आन्दोलन अपनी रचनाधर्मिता में व्यक्त होता रहा। नवें दशक में आन्दोलनों के आवृत्तों से बाहर आकर कहानी ने अपना स्वतन्त्र रचनाशील व्यक्तित्व निर्मित किया है। बीसवी सदी के आखिरी दशक में हिन्दी कहानी का वैविध्य पुराने, नये और इसी दशक में

उभरे कहानीकारों की रचनात्मक ऊर्जा का प्रतिफल है कि सदी की अवसान–वेला में हिन्दी कहानी अत्यंत समृद्ध धरातल पर खड़ी है।

हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास के चरण, भले ही यहाँ उल्लेख करना जरूरी न हों किन्तु, भारत की आजादी एक सदी की कहानी की भी विभाजक रेखा है। 'सैंतालीस से आज तक लगभग पचास वर्षों में हिन्दी कहानी ने एक लंबा सफर तय किया है। भारतीय जीवन के धरातल पर बड़ी जमीन तैयार की है। एक कलात्मक लचीलापन भी अर्जित किया है। इसकी अभिव्यक्ति के चुनिंदा उदाहरण हिन्दी कहानी की विविधता और सक्षमता को प्रमाणित करते हैं।[16]

स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी कहानी का क्षितिज नयी सम्भावनाओं से भरा नजर आता है। एक नयी रचना–मुद्रा पुरानी कहानी की जड़ता को तोड़ती नजर आती है। 'स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मानसिक अपाहिजपन और लाचारी की पुरानी मुद्रा से छिटक कर हिन्दी कहानी ने पैनी आँख, व्यापक अनुभव और सामर्थ्य से भारतीय मुहावरे को नयी ऊर्जा और अभिव्यक्ति दी है। सत्ता और राजनीति के द्वंद्व, व्यक्ति और समाज की पड़ताल, पीढ़ियों की दूरियाँ, बदलते संबंधों की छटपटाहट–भारतीय समाज और जीवन में हो रहे परिवर्तनों को हिन्दी कहानी ने सशक्त मुहावरे से अपनपाकर उसके द्वारा कलात्मक बहुरंगी विविधता की समग्रता में भारतीयता की अभिव्यक्ति की, एक बड़े फलक पर उसे नयी पहचान दी, भाषा के स्तर पर उसे एक पुख्ता लोकतांत्रिक मुहावरा दिया और राष्ट्रीय चेतना का सृजनात्मक प्रतिमान स्थापित किया।'[17]

आठवें दशक के बाद कहानी किसी विचारधारा से आक्रांत नहीं रही, वादों का शोर भी नहीं रहा और कोई स्वतः स्फूर्त या व्यक्ति केन्द्रित आंदोलन भी नहीं रहा। फिर भी कहानी का आवाद रचना–संसार है। यह एकदम संयोग नहीं है कि आठवें दशक के बाद कहानी बिना किसी नारे के आगे बढ़ती रही। गनीमत यह कहीं जाएगी कि कोई ऐसा आंदोलन नहीं हुआ जो कहानी की रचनात्मकता को खंडित करता। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि आठवें दशक की भीषण उथल–पुथल और आन्दोलनों को गहरी अनुगूँजें नौवें दशक की कहानी तक पायी जाती है।

हिन्दी कहानी ने समय के साथ चलते हुए, सदी के आखिरी दशक में आकर समसामयिक राजनैतिक–सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन स्थितियों और पूरे परिवेश के व्यापक परिवर्तनों से साक्षात्कार किया है। हिन्दी कहानी की प्रवृत्तियों से परिचित होने के लिए दशकों में कहानी के विकास को विभाजित करने की परंपरा नयी कहानी आन्दोलन के दौरान शुरू हुई थी।

स्वतन्त्रता के पश्चात् सामाजिक समस्याओं के मूल में आर्थिक कारण सक्रिय रहे हैं। लेकिन राजनीतिक लाभ उठाने के लिए उन्हें धर्म, जाति और संप्रदाय से जोड़ा गया। सातवें–आठवें दशकों में मूल्यों की यह क्षयशीलता स्पष्टतर होती गई है। नैतिकता, मार्यादा, आस्था, विश्वास, आदर्श आदि की अवधारणाएँ बदली हैं। मूल्यों की नए–नए संदर्भों और प्रसंगों में परिभाषित किया गया है। हिन्दी कहानियाँ इन तथ्यों की गवाही देती हैं।

नवें–दसवें दशकों के दौरान सामाजिक संरचना में आया परिवर्तन इधर लिखी गई कहानियों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इन कहानियों को कहानी परपंरा की अगली कड़ी कर कर, उनका दायरा सीमित नहीं किया जा सकता। समकालीन परिस्थितियों का प्रभाव कहानी की रचनात्मकता पर भी पड़ा है। 'इसलिए समकालीन कहानी को यदि हम काट कर नहीं देख सकते तो यह भी कह सकते हैं कि यह कहानी पूर्व की कहानी में विकासात्मक रूप से उसका अगला चरण तो होगी ही। उससे भिन्न भी हो सकती है। पिछले दो दशकों का माहौल शांत तो नहीं कहा जा सकता और नौवा दशक तो उसमें अधिक अशांत और हलचलपूर्ण रहा है।'[18]